भूगोल

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. पर्यटन आकर्षण के प्रमुख कारक बताइए।

उत्तर- पर्यटन आकर्षण के प्रमुख कारक-- पर्यटकों को आकर्षित करने में निम्नलिखित कारकों की भूमिका अग्रणी रहती है--

(1) जलवायु--- अवकाश की अवधि के दौरान पर्यटक प्रायः ऐसे क्षेत्रों में जाना पसन्द करते हैं, जहाँ अनुकूल जलवायु दशायें मिलती हों। यूरोप में शीतकालीन अवकाश का आनंद उठाने के लिए अधिकांश पर्यटक भूमध्य सागरीय क्षेत्रों के उष्ण व धूपदार मौसम से आकर्षित होकर इन क्षेत्रों में आते हैं।

(2) भूदृश्य-- आकर्षक पर्वतीय भूदृश्य, झीलें तथा सागरीय तट जैसे प्राकृतिक भूदृश्य पर्यटकों को प्रमुख रूप से आकर्षित करते है।

(3) इतिहास एवं कला-- प्राचीन स्मारक, विरासत स्थल, पुरातत्व स्थलों, किलों, महलों तथा धार्मिक स्थलों का आकर्षण भी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

(4) संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था-- सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा पर्यटक क्षेत्रों के वे अधिवास जहाँ पर्यटकों को सस्ती दरों पर आवासीय व भोजन व्यवस्था उपलब्ध होती है, उन क्षेत्रों की ओर भी अधिक पर्यटक आकर्षित होते हैं। गोवा में हेरीटेज होम्स तथा कर्नाटक में मैडीकरे तथा कूर्ग इसके उदाहरण

2. प्राथमिक एवं द्वितीयक गतिविधियों में क्या अन्तर है ? बताइए।

उत्तर- प्राथमिक गतिविधियाँ--

1. प्राथमिक गतिविधियों में प्रकृति से प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का सीधा उपयोग होता है।

2. इस प्रकार की गतिविधियों के अन्तर्गत आखेट, भोजन संग्रह, पशुचारण, मछली पकड़ना, वनों से लकड़ी काटना, कृषि एवं

3. प्राथमिक गतिविधियों में कार्य करने वाले लोगों का कार्यक्षेत्र अपने घर से बाहर होने के कारण इन्हें लाल कॉलर श्रमिक कहते है।

द्वितीयक गतिविधियों--

1. द्वितीयक गतिविधियों में प्रकृति से प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का सीधा उपयोग नहीं होता वरन् इन संसाधनों के स्वरूप को परिवर्तित कर उनको मानव के लिए अधिक उपयोगी बनाया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि द्वितीयक गतिविधियों में वे सभी कार्य सम्मिलित होते हैं जो प्राथमिक क्रियाओं द्वारा उपलब्ध वस्तुओं को मानव के लिए प्रत्यक्ष रूप से अधिक उपयोगी माल में रूपान्तरित करते हैं।

2. द्वितीयक गतिविधियों में विनिर्माण प्रसंस्करण और निर्माण (अवसंरचना) उद्योग सम्मिलित होते हैं।

3. द्वितीयक गतिविधियों में लाल कॉलर श्रमिकों के अलावा एक बड़ी संख्या सफेद कॉलर श्रमिकों (व्यावसायिक श्रमिकों) तथा नीले कॉलर श्रमिकों (उच्च दक्ष एवं विशिष्ट) व व्यावसायिक श्रमिकों की होती है।

3. जल संभर प्रबंधन क्या है ? भारत के विभिन्न भागों में चलाये जा रहे जल संभर विकास कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर- जल संभर प्रबंधन–जल संभर प्रबंधन से आशय मुख्य रूप से धरातलीय एवं भौमजल संसाधनों के दक्ष प्रबंधन से है। इसके अन्तर्गत बहते जल को रोकना और विभिन्न विधियों से अंत:स्रवण तालाब, पुनर्भरण, कुओं आदि के द्वारा भौमजल का संचयन एवं पुनर्भरण सम्मिलित है।

भारत के विभिन्न भागों में निम्नलिखित जल संग्रहण कार्यक्रम प्रमुख रूप से प्रचलित हैं--

(i) नीरू-मीरू (जल और आप) कार्यक्रम-- आन्ध्र प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र,

(ii) अरवारी पानी संसद-राजस्थान के अलवर जिले में,

(iii) हरियाली–केंद्र सरकार द्वारा भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में।

उक्त कार्यक्रमों के अन्तर्गत स्थानीय ग्रामीण लोगों के सहयोग से विभिन्न जल संग्रहण संरचनाएँ; जैसे-अंत:स्रवण तालाब, ताल (जोहड़) की खुदाई कर रोक बाँध निर्मित किये गये हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत रूप से वर्षा जल संग्रहण हेतु विभिन्न प्रकार के जलाशयों; जैसे-झीलों, तालाबों तथा कुंदो का निर्माण किया जा रहा है। तमिलनाडु भारत का प्रथम राज्य है जिसने प्रत्येक घर में जल-संग्रहण संरचना का निर्माण अनिवार्य कर दिया है।

4. ग्रामीण विपणन केन्द्रों एवं नगरीय बाजार केन्द्रों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- ग्रामीण विपणन केन्द्रों एवं नगरीय बाजार केन्द्रों में निम्नलिखित अंतर हैं–

ग्रामीण विपणन केन्द्र

(i) ये निकटवर्ती बस्तियों का पोषण करते है ।

(ii) ये अर्द्धनगरीय व्यापारिक केन्द्र होते हैं।

(ii) यहाँ व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक सेवाएँ सुविकसित नहीं होती हैं।

(iv) ये स्थानीय संग्रहण एवं वितरण केन्द्र होते हैं। इनमें से अधिकांश केन्द्रों में थोक बाजार एवं फुटकर व्यापार क्षेत्र भी होते हैं।

(v) यह ग्रामीण लोगों की अधिक माँग वाली वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध कराने वाले महत्वपूर्ण केन्द्र हैं।

नगरीय बाजार केन्द्र

(i) ये नगरीय बस्तियों का पोषण करते हैं।

(ii) ये नगरीय व्यापारिक केन्द्र होते हैं।

(ii) यहाँ और अधिक विशिष्टीकृत नगरीय सेवाएँ मिलती हैं।

(iv) ये विनिर्मित पदार्थों के साथ-साथ विशिष्टीकृत बाजार भी प्रस्तुत करते हैं। जैसे–श्रम बाजार, आवासन, अर्द्धनिर्मित एवं निर्मित उत्पादों का बाजार।

(v) यह शैक्षिक संस्थाओं और व्यावसायियों की सेवाएँ जैसे–अध्यापक, वकील, परामर्शदाता, चिकित्सक, आदि की सेवायें उपलब्ध कराते हैं।

5. वर्तमान समय में आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की विशेषताएँ वर्तमान समय में बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं--

(i) कौशल का विशिष्टीकरण/उत्पादन की विधियाँ-- बड़े पैमाने पर कार्यरत विनिर्माण उद्योगों में बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है तथा इसमें प्रत्येक श्रमिक लगातार एक ही प्रकार के कार्य को करता है।

(ii) यन्त्रीकरण--- आधुनिक बड़े पैमाने के विनिर्माण में स्वचालित यन्त्रीकरण देखने को तो मिलता ही है, साथ ही कम्प्यूटर युक्त नियन्त्रण प्रणाली से युक्त कारखानों में स्वचालित मशीनों की उत्पादन प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। आज बड़े पैमाने पर विनिर्माण में यंत्रीकरण समस्त विश्व में नजर आने लगा है।

(iii) प्रौद्योगिकीय नवाचार-- इसके अन्तर्गत शोध एवं विकसित विधियों के द्वारा विनिर्माण की दक्षता को नियन्त्रित करना, अपशिष्टों का समुचित निस्तारण, तकनीकी दक्षता में अभिवृद्धि तथा प्रदूषण को नियन्त्रित करने जैसे उपाय सम्मिलित हैं।

6. क्या आप सोचते हैं कि जल संभर प्रबंधन सतत् पोषणीय विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है?

उत्तर- सतत् पोषणीय विकास में जल संभर प्रबन्धन की भूमिका--- सतत् पोषणीय विकास की संकल्पना की आधारभूत मान्यता यह है कि प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की दर प्राकृतिक संसाधनों के नवीनीकरण की दर से अधिक नहीं होनी चाहिए, जबकि जल संभर प्रबन्धन का प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों तथा समाज के मध्य सन्तुलन स्थापित करना है। स्पष्ट है कि जल संभर विकास तथा सतत् पोषणीय विकास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है।

भारत के कुछ क्षेत्रों में राज्य तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा अनेक जल संभर विकास व प्रबन्धन कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इनमें से कुछ कार्यक्रम गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी चलाये जा रहे हैं। हरियाली, नीरू-मीरू तथा अरवारी पानी संसद भारत के कुछ उल्लेखनीय जल संभर कार्यक्रम हैं जो स्थानीय लोगों के सहयोग से सफलतापूर्वक संचालित किये जा रहे हैं। भारत के कुछ क्षेत्रों में संचालित की जा रही विभिन्न जल संभर परियोजनाओं ने सम्बन्धित क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तथा पर्यावरण का कायाकल्प करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन इस क्षेत्र में देश में बहुत कुछ करना अभी शेष है। देश की आम जनता के बीच जल संभर विकास व प्रबन्धन के लाभों का प्रचार-प्रसार कर जन जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है। वस्तुतः सतत् पोषणीय विकास में जल संभर प्रबन्धन उपागम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

7. पर्यटन से क्या आशय है ? पर्यटन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- पर्यटन से आशय-- पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो व्यापार की बजाय आमोद-प्रमोद के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए की जाती है।

पर्यटन की प्रमुख विशेषताएँ-

1. तृतीयक क्रियाकलापों में पर्यटन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सेवा क्षेत्र है जिससे विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 40 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है।

2. विश्व में पर्यटन सेवा के क्षेत्र में लगभग 25 करोड़ व्यक्तियों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त है।

3. पर्यटकों को आवास, भोजन, परिवहन, मनोरंजन तथा विशेष दुकानों जैसी सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय लोगों को रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं।

4. पर्यटन सेवाओं द्वारा स्थानीय स्तर पर अवसंरचना उद्योगों, फुटकर व्यापार तथा शिल्प उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।

5. विश्व के कुछ पर्यटक स्थलों पर पर्यटन मौसम पर निर्भर होता है जबकि कुछ पर्वतीय पर्यटक स्थल वर्ष पर्यन्त पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

8. परम्परागत बड़े पैमाने वाले औद्योगिक प्रदेशों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– परम्परागत बड़े पैमाने वाले औद्योगिक प्रदेश– परम्परागत बड़े पैमाने वाले औद्योगिक प्रदेशों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं–

(i) इनमें धातु पिघलाने वाले उद्योग, भारी इन्जीनियरिंग, रसायन निर्माण तथा वस्त्र उद्योग जैसे धुएँ की चिमनी वाले उद्योग कार्यरत मिलते हैं।

(ii) इन उद्योगों में रोजगार का उच्च अनुपात मिलता है।

(iii) इन उद्योगों के क्षेत्रों में जन घनत्व बहुत अधिक देखने को मिलता है।

(iv) इन उद्योगों के क्षेत्रों में निम्न स्तर के आवासीय प्रारूप देखने को मिलते हैं।

(v) इन उद्योगों के क्षेत्रों में पर्यावरण, प्रदूषण मिलता है।

(vi) इन उद्योगों के क्षेत्रों में बेरोजगारी की भारी समस्या देखने को मिलती है।

(vii) यहाँ उत्प्रवास की समस्या देखने को मिलती है।

(viii) विश्व-व्यापी माँग कम होने से कारखाने बन्द होने के कारण यहाँ परित्यक्त भूमि भी अधिक मिलती

9. वर्षा जल संग्रहण क्या है ? वर्षा जल संग्रहण की प्रचलित विधियाँ बताइए।

उत्तर-- वर्षा जल संग्रहण से आशय--- वर्षा जल संग्रहण एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा विभिन्न उपयोगों के लिए वर्षा के जल को रोका व एकत्रित किया जाता है। यह एक ऐसी कम मूल्य और पारिस्थितिकी अनुकूल विधि है जिसके द्वारा वर्षा जल की प्रत्येक बूँद को संरक्षित करने के लिए वर्षा जल को नलकूपों, गड्ढों तथा कुओं में इकट्ठा किया जाता है।

वर्षा जल संग्रहण की प्रचलित विधियाँ-- देश के विभिन्न भागों में लम्बे समय से वर्षा जल संग्रहण की विभिन्न विधियों का उपयोग किया जा रहा है, जिनमें निम्नलिखित तीन विधियाँ उल्लेखनीय हैं–

(1) टाँका-- राजस्थान के अर्द्धशुष्क तथा शुष्क क्षेत्रों में स्थित बस्तियों में परम्परागत रूप से एक वर्षा जल संग्रहण ढाँचे का उपयोग किया जाता है। टाँका या कुंड के नाम से प्रसिद्ध यह वर्षा जल संग्रहण ढाँचा वस्तुतः एक ढकी हुई भूमिगत टंकी होती है, जिसका निर्माण घर में या घर के पास वर्षा जल को एकत्र करने के उद्देश्य से किया जाता है।

(2) तालाब एवं झील-- ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत रूप से वर्षा जल संग्रहण के लिए धरातलीय संरचनाएँ; जैसे-तालाब एवं झीलों का उपयोग किया जाता है।

(3) जल संभर प्रबन्धन द्वारा प्रस्तर कूप व चैक डैम निर्मित कर जल संग्रहण।

(4) सर्विस कूपों द्वारा घरों की छतों से वर्षा जल का संग्रहण।

(5) पुनर्भरण कूपों द्वारा वर्षा जल का संग्रहण।

10. पर्यटन क्या है? पर्यटन आकर्षण के प्रमुख कारक बताइए।

उत्तर– पर्यटन-- पर्यटन एक मात्रा है जो व्यापार की अपेक्षा आमोद-प्रमोद के उद्देश्य से की जाती है। दूसरे शब्दों में, मनोरंजन के लिए की गयी मात्रा पर्यटन कहलाती है।

पर्यटन आकर्षण के प्रमुख कारक--पर्यटकों को आकर्षित करने में निम्नलिखित कारकों की भूमिका अग्रणी रहती है–

(1) जलवायु-- अवकाश अवधि के दौरान पर्यटक प्रायः ऐसे क्षेत्रों में जाना पसन्द करते हैं, जहाँ अनुकूल जलवायु दशायें मिलती हों। यूरोप में शीतकालीन अवकाश का आनंद उठाने के लिए अधिकांश पर्यटक भूमध्य सागरीय क्षेत्रों के उष्ण व धूपदार मौसम से आकर्षित होकर इन क्षेत्रों में आते हैं।

(2) भूदृश्य आकर्षण-- पर्वतीय भूदृश्य, झीलें तथा सागरीय तट जैसे प्राकृतिक भूदृश्य पर्यटकों को प्रमुख रूप से आकर्षित करते है।

(3) इतिहास एवं कला-- प्राचीन स्मारकों, विरासत स्थलों, पुरातत्व स्थलों, किलों, महलों तथा धार्मिक स्थलों का आकर्षण भी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

(4) संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था-- सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा पर्यटक क्षेत्रों के वे अधिवास जहाँ पर्यटकों को सस्ती दरों पर आवासीय व भोजन व्यवस्था उपलब्ध होती है. उन क्षेत्रों की ओर भी अधिक पर्यटक आकर्षित होते हैं। गोवा में हेरीटेज होम्स तथा कर्नाटक में मैडीकरे तथा कूर्ग इसके उदाहरण है।

11. कच्चे माल की प्राप्ति तक अभिगम्यता उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उद्योगों में बहुत बड़ी मात्रा में कच्चे माल की आवश्यकता होती है। यदि यह कच्चा माल दूर से मँगाया जाता है तो परिवहन में काफी खर्च होता है। उद्योगों के लिए कच्चा माल अपेक्षाकृत सस्ता एवं सरलता से परिवहन योग्य होना चाहिए। यदि कच्चा माल भारी है तो परिवहन मूल्य अधिक लगता है और लागत खर्च बढ़ जाता है। अतः जिन क्षेत्रों में भारी कच्चे माल की प्राप्ति तक की अभिगम्यता होती है, उनमें विनिर्माण उद्योग लगाये जा सकते हैं; जैसे-लौह-इस्पात व चीनी के कारखाने, सीमेण्ट के कारखाने, लुगदी का बनाना, कागज उद्योग आदि कच्चे माल की सुलभता से मिलने पर निर्भर रहते हैं। जो पदार्थ शीघ्र नष्ट होने वाले होते हैं, उनके 'निर्माण उद्योग भी उन पदार्थों की उपलब्धता के समीप ही स्थापित किए जाते हैं; जैसे-दुग्ध ' पदार्थों, पनीर, मक्खन आदि का निर्माण तथा फलों से डिब्बा बन्द सामग्री का निर्माण आदि।

12. जल संरक्षण की आवश्यकता क्यों है ? इसके संरक्षण हेतु क्या-क्या उपाय किये जा सकते हैं ? संक्षेप में बताइये।

उत्तर- जल संरक्षण की आवश्यकता-- हमारे देश में अलवणीय जल की उपलब्धता स्थान और समय के अनुसार भिन्न-भिन्न है। वर्तमान समय में इसकी घटती हुई उपलब्धता एवं बढ़ती माँग से सतत पोषणीय विकास के लिए इस महत्वपूर्ण जीवनदायी संसाधन के संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है।

जल संरक्षण हेतु उपाय--जल संरक्षण हेतु जल बचत तकनीकी एवं विधियों के विकास के साथ-साथ जल प्रदूषण से बचाव के भी प्रयास किये जाने आवश्यक हैं। इस हेतु जल संभर विकास, वर्षा जल संग्रहण, जल के 'पुनः चक्रण और पुनः उपयोग तथा लम्बे समय तक जल की आपूर्ति के लिए जल के 'संयुक्त उपयोग को प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है।

13. भारत में चिकित्सा पर्यटन को बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए जाने चाहिए।

उत्तर- जब लोग अपनी चिकित्सा या उपचार के लिए अपने देश से बाहर अन्य किसी देश की यात्रा करते हैं तो यह चिकित्सा पर्यटन कहलाता है। भारत चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में विश्व में एक प्रमुख स्थान के रूप में उभरा है। भारत में चिकित्सा पर्यटन को बढाने के लिए निम्नलिखित प्रयास किये जाने चाहिए।

(i) देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा केन्द्र (वेलनेस सेंटर) स्थापित किये जाएँ।

(ii) चिकित्सा पर्यटन को बढावा देने के लिए मेडिकल वीजा जारी करने में शीघ्रता लायी जाये। इस हेतु वीजा कानूनों में सरलता लायी जाये।

(iii) चिकित्सा सेवा की लागत को अन्य देशों के मुकाबले कम किया जाये।

(iv) भारत आने वाले रोगियों के लिए आवास की लागत में कमी लायी जाये।

(v) विदेशी मरीजों की बढ़ती संख्या भारतीय मरीजों के लिए परेशानी का कारण बन सकती है अतः ऐसे में सरकार को समय रहते इस उद्योग को विकसित करना चाहिए।

(vi) भारत को चिकित्सा और स्वास्थ पर्यटन स्थल के साथ में विकसित और प्रोत्साहित करने के लिए मान्यता प्राप्त अस्पतालों की संख्या को बढ़ाया जाये।

(vii) देश के चिकित्सा और स्वास्थ्य क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों के बारे में एक डाटा बैंक तैयार किया जाये ताकि सम्बधित सूचनाओं का दायरा बढाने के लिए कार्य पद्धति तैयार की जा सके।

14. फुटकर व्यापार का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर- फुटकर व्यापार- उपभोक्ताओं को वस्तुओं के प्रत्यक्ष विक्रय से सम्बन्धित व्यापारिक क्रियाकलापों को फुटकर व्यापार कहा जाता है। फुटकर व्यापार अधिकांशत, विक्रय के नियत प्रतिष्ठानों एवं भंडारों में सम्पन्न होता है। फेरी, रेहड़ी, ट्रक, द्वार से द्वार, डाक आदेश, दूरभाष, स्वचालित-बिक्री मशीनें तथा इंटरनेट फुटकर बिक्री के भंडार रहित उदाहरण हैं। फुटकर विक्रेता वह व्यापारी होते हैं जो थोक विक्रेताओं से और कभी-कभी सीधे उत्पादक से माल का क्रय कर, उपभोक्ता को बेच देते हैं। वे साधारणतया अपने कार्य की फुटकर दुकानों के माध्यम से करते हैं तथा माल का विक्रय थोड़ी मात्रा में करते हैं। वे दिन प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का व्यापार करते हैं।

सामान्यतया थोक विक्रेता के मुकाबले फुटकर व्यापारी को बहुत कम पूँजी की आवश्यकता होती है तथा वह व्यापार में नकद लेनदेन करता है।

फुकर व्यापारी के प्रमुख कार्य हैं- उपभोक्ताओं की आवश्यकता की सतत् पूर्ति करना। उपभोक्ताओं से अच्छे सम्बन्ध बनाकर उन्हें माल वापसी की सुविधा देना। उपभोक्ताओं को नकद माल बेचने के साथ ही कभी-कभी उधार माल देने की जोखिम उठाना। श्रेणी रहित वस्तुओं को श्रेणीबद्ध करना। फुटकर व्यापार में भंडार तीन प्रकार के होते हैं–

(i) उपभोक्ता भंडार (ii) विभागीय भंडार (iii) शृंखला भंडार।

15. कच्चे माल पर आधारित उद्योगों को वर्गीकृत कीजिए।

उत्तर- कच्चे माल पर आधारित उद्योगों कीविर्गीकरण-- कच्चे माल पर आधारित उद्योगों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है-

(i) कृषि आधारित उद्योग-- इस वर्ग के उद्योग कृषि से प्राप्त उत्पादों का प्रयोग कच्चे माल के रूप में करते हैं। ऐसे उद्योगों में भोजन प्रसंस्करण उद्योग, चीनी उद्योग, सूती व रेशमी वस्त्र उद्योग, जूट, चाय, कॉफी तथा रबड़ उद्योग सम्मिलित हैं।

(ii) खनिज आधारित उद्योग-- इस वर्ग में वे उद्योग सम्मिलित हैं जो कच्चे माल के रूप में खनिजों का प्रयोग करते हैं। इनमें से कुछ उद्योग लौह अंश वाले धात्विक खनिजों का उपयोग करते हैं जैसे- लौह-इस्पात उद्योग। जबकि कुछ उद्योग अलौह धात्विक खनिजों का प्रयोग करते हैं; जैसे-ताँबा, एल्यूमिनियम एवं रत्न-आभूषण उद्योग। दूसरी ओर कुछ उद्योग ऐसे होते हैं जो कच्चे माल के रूप में अधात्विक खनिजों का उपयोग करते हैं; जैसे-सीमेण्ट व चीनी मिट्टी के बर्तनों का उद्योग।

(iii) रसायन आधारित उद्योग-- इस वर्ग के उद्योग कच्चे माल के रूप में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले रासायनिक पदार्थों का उपयोग करते हैं। पेट्रो-रसायन उद्योग, नमक उद्योग, गन्धक उद्योग, पोटाश उद्योग, प्लास्टिक उद्योग तथा कृत्रिम रेशे बनाने का उद्योग इस वर्ग के प्रमुख रसायन आधारित उद्योग हैं।

(iv) वनों पर आधारित उद्योग-- इस वर्ग के उद्योग वनों से प्राप्त अनेक मुख्य व गौण उत्पादों का उपयोग अपने कच्चे माल के रूप में करते हैं। फर्नीचर उद्योग, कागज उद्योग तथा लाख उद्योग प्रमुख वन आधारित उद्योग हैं।

(v) पशु आधारित उद्योग-- पशुओं से प्राप्त चमड़ा तथा ऊन ऐसे महत्त्वपूर्ण पशु उत्पाद हैं जिनका उपयोग कच्चे माल के रूप में क्रमशः चमड़ा उद्योग तथा ऊनी वस्त्र उद्योग द्वारा किया जाता है।

16. आकार के आधार पर विनिर्माण उद्योगों को वर्गीकृत कीजिए।

उत्तर- **आकार के आधार पर विनिर्माण उद्‌योगों का वर्गीकरण-** आकार के आधार पर विनिर्माण उद्‌योगों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है–

(1) कुटीर उद्‌योग-- कुटीर या घरेलू उद्‌योग वस्तु निर्माण की सबसे छोटी इकाई है। इसमें पूँजी का समावेश न्यूनतम तथा मानवीय श्रम का समावेश अधिकतम होता है। कुटीर उद्‌योग में साधारण औजारों द्‌वारा परिवार के अधिकांश सदस्य मिलकर विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। भारत में कुटीर उद्‌योग के अन्तर्गत जुलाहों द्‌वारा कपड़े बनाने, चमड़े से निर्मित वस्तुएँ, कुम्हार द्‌वारा मिट्‌टी के बर्तनों के निर्माण को प्रमुख रूप से शामिल किया जाता है। कुछ वस्तुएँ स्थानीय रूप से उपलब्ध वनोत्पादों से भी निर्मित की जाती हैं।

(2) छोटे पैमाने के उद्‌योग-- इस स्तर के उद्‌योगों में स्थानीय कच्चे माल, अर्द्‌ध-कुशल श्रमिक तथा शक्ति संचालित मशीनों का प्रयोग होता है। यह उद्‌योग घर से बाहर लगाए जाते हैं तथा इनमें उत्पादन की तकनीक कुटीर उद्‌योगो को तुलना में उत्तम होती है। छोटे पैमाने के उद्‌योग स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

(3) बड़े पैमाने के उद्‌योग-- बड़े पैमाने के लिए विस्तृत बाजार, विभिन्न प्रकार के कच्चे माल, पर्याप्त शक्ति आपूर्ति, कुशल श्रमिक, विकसित तकनीक, अधिक उत्पादन तथा पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। प्रारम्भ में इन उद्‌योगा का विकास ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग तथा यूरोपियन देशों में हुआ, लेकिन वर्तमान में इन उद्‌योगों का विकास विश्व के अधिकांश देशों में मिलता है।

17. भारतीय राष्ट्रीय जल नीति 2002 की कोई 3 विशेषताओं का उल्लेख कीजिए?

उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय जल नीति 2002 की मुख्य विशेषताएँ- भारतीय राष्ट्रीय जल नौति 2002 की 3 मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं

(1) जल का वितरण पहली प्राथमिकता में पीने के लिए, उसके बाद सिंचाई, पन बिजली, पारिस्थितिकी, कृषि, उद्‌योगों और गैर कृषि उद्‌योगों, अन्वेषण और अन्य उपयोगों के लिए इसी क्रम में किया जाना चाहिए।

(2) सतही जल और भौमजल दोनों की गुणवत्ता की नियमित रूप सोचाँच होनी चाहिए। प्राकृतिक धाराओं में निर्वहन से पहले अपशिष्ट को स्वीकार्य स्तर और मानकों के अनुसार खोषित किया जाना चाहिए। पारिस्थितिकी को बनाए रखने के लिए धाराओं के बारहमासी न्यूनतम प्रवाह सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

(3) जल एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन, एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता और कीमती राष्ट्रीय सम्पत्ति है। जल संसाधनों का नियोजन, विकास और प्रबंधन राष्ट्रीय दृष्टिकोण से संचालित किये जाने की आवश्यकता है।

18. जल गुणवत्ता में ह्रास के कारणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए?

उत्तर- जल गुणवत्ता से आशय जल की शुद्धता अथवा अनावश्यक बाहरी पदार्थों से रहित जल से होता है। सूक्ष्म जीव, रासायनिक पदार्थ, औद्योगिक व अन्य अपशिष्ट जैसे पदार्थों के शुद्ध जल में मिश्रण से जल गुणवत्ता में ह्रास होता है अर्थात जल के गुणों में कमी आती है। तथा वह जल प्रदूषित जल की श्रेणी में आ जाता है। झीलों, नदियों, सागरों तथा अन्य जलाशयों में जब बाह्य स्रोतों से निष्कासित विषैले पदार्थ आकर मिल जाते हैं तो जल के गुणों में कमी आने से जलीय तन्त्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। गंगा तथा यमुना. देश की सर्वाधिक प्रदूषित नदियाँ हैं। गंगा तथा यमुना सहितं भारत की अधिकांश नदियों में प्रदूषकों का संकेन्द्रण ग्रीष्मकालीन अवधि में बहुत अधिक होता है क्योंकि उस समय नदी में जल का प्रवाह बहुत कम रह जाता है। कभी-कभी प्रदूषित जल भूमि के अन्दर प्रवेश कर भूमिगत जल को भी प्रदूषित कर देता है। वस्तुतः प्रदूषित. जल मानव के उपयोग के योग्य नहीं रहता।

19: तृतीयक क्रियाकलापों में कौन-कौन-से क्रियाकलाप सम्मिलित किये जाने चाहिए।

उत्तर- तृतीयक क्रियाकलाप सेवा सेक्टर से सम्बन्धित ऐसा क्षेत्र है जिनमें मूर्त वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन सम्मिलित होता है। तृतीयक क्रियाकलापों में उत्पादन तथा विनिमय दोनों सम्मिलित होते हैं। उत्पादन में उपभोग की जाने वाली सेवाएँ सम्मिलित होती हैं तथा इसे पारिश्रमिक तथा वेतन के रूप में मापा जाता है। जबकि विनिमय के अन्तर्गत व्यापार, परिवहन तथा संचार सेवायें सम्मिलित होती हैं जिनका उपयोग दूरी को तय करने के लिए किया जाता है। वस्तुतः तृतीयक क्रियाकलापों में भौतिक वस्तुओं का उत्पादन न कर, सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन होता है। उदाहरण के लिए- नलसाज, बिजली मिस्त्री, तकनीशियन, धोबी, नाई, चालक, दुकानदार, कोषपाल, अध्यापक, चिकित्सक, प्रकाशक तथा वकील आदि।

20. उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले किन्ही तीन कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने में तीन कारक निम्नलिखित हैं—

(i) बाजार तक अभिगम्यता (पहुँच)--- जिन क्षेत्रों में किसी उद्योग विशेष की वस्तुओं की खपत अधिक होती है, वहीं वे उद्योग प्रारम्भ हो जाते हैं। ऐसा करने से तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने का व्यय कम हो जाता है। यह तब अधिक लाभप्रद होता है, जब तैयार माल कच्चे माल की तुलना में अधिक भारी होता है। इसी कारण सीमेण्ट, फर्नीचर, काँच मिट्टी के बर्तन, चीनी के बर्तन आदि उद्योग खपत क्षेत्र की समीपता पर निर्भर रहते हैं।

(ii) कच्चे माल की प्राप्ति तक अभिगम्यता-- उद्योगों में बहुत बड़ी मात्रा में कच्चे माल की आवश्यकता होती है। यदि यह कच्चा माल दूर से मँगाया जाता है तो परिवहन में काफी खर्च होता है। यदि कच्चा माल भारी है तो परिवहन मूल्य अधिक लगता है और लागत खर्च बढ़ जाता है। अतः जिन क्षेत्रों में भारी कच्चे माल की प्राप्ति तक की अभिगम्यता होती है, उनमें विनिर्माणी उद्योग लगाये जा सकते हैं। जैसे-चीनी के कारखाने, सीमेण्ट की फैक्ट्रियाँ, लुगदी का बनाना, कागज उद्योग आदि कच्चे माल की सुलभता मिलने पर निर्भर रहते हैं।

(iii) शक्ति के साधनों तक अभिगम्यता-- ऐसे उद्योग जिनमें ऊर्जा की खपत बहुत अधिक होती है, उनको ऊर्जा उत्पादक स्रोतों के समीप ही स्थापित किया जाता है; जैसे-एल्यूमिनियम उद्योग। शक्ति के स्रोतों में कोयला के अलावा खनिज तेल तथा जलविद्युत भी सम्मिलित होते हैं।

21. भारत के कृषि क्षेत्र में सिंचाई हेतु जल की आवश्यकता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— भारत के कृषि क्षेत्र में सिंचाई की आवश्यकता— कृषि क्षेत्र में जल का उपयोग मुख्य रूप से सिंचाई के लिए किया जाता है। कृषि की सफलता के लिए सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है। सिंचाई की आवश्यकता के निम्न कारण है—

(i) भारत में वर्षा का स्थानिक वितरण बहुत असमान है। देश के अधिकांश भागों में पर्याप्त मात्रा में वर्षा नहीं होती और जल का अभाव बना रहता है।

(ii) देश के अधिकांश भागों में शीत एवं ग्रीष्म ऋतुओं में अत्यधिक शुष्कता पायी जाती है। इसलिए शुष्क ऋतुओं में बिना सिंचाई के कृषि कार्य किया जाना सम्भव नहीं होता है।

(iii) भारत में वर्षा मुख्यतः दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी पवनों से होती है जो बहुत ही अनिश्चित होती है। जिसके फलस्वरूप कृषि को सुरक्षा सिंचाई से ही मिल सकती है।

(iv) कुछ फसलों की प्रकृति ऐसी होती है कि उनकी सफल कृषि के लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है। कपास, गन्ना, जूट आदि कुछ ऐसी ही फसलें हैं। इन फसलों के लिए जल की आपूर्ति केवल सिंचाई द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है।

(v) अधिक उपज देने वाली फसलों की कई किस्मों के लिए अधिक आर्द्रता की आवश्यकता होती है जो सिंचाई द्वारा ही सम्भव है।

22. आवधिक बाजार क्या हैं ? ये लोगों एवं दुकानदारों के लिए किस प्रकार लाभकारी होते हैं ? बताइए।

उत्तर- ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित बाजार न होकर एक निश्चित समय पर स्थानीय रूप से आवधिक बाजार लगाए जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले ये बाजार साप्ताहिक या पाक्षिक होते हैं तथा किसी निश्चित दिन/अथवा तिथि पर लगते हैं। इन बाजारों में आने वाले अधिकांश दुकानदार आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले लगभग सभी आवधिक बाजारों में अपनी सेवायें दिन/तिथि के अनुसार प्रदान करते हैं जिसके कारण महीने के अधिकांश दिनों में यह दुकानदार व्यस्त रहते हैं। किसी ग्रामीण बस्ती में लगने वाले आवधिक बाजार में मूल ग्रामीण बस्ती के अलावा समीपवर्ती ग्रामीण बस्तियों के लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं की खरीदारी करते हैं। इस प्रकार यह बाजार एक विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान करते रहते हैं।

23. "द्वितीयक गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ जाता है।" कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- द्वितीयक गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ जाता है। द्वितीयक गतिविधियाँ प्रकति से प्राप्त कच्चे माल का रूप बदलकर उसे और अधिक मूल्यवान बना देती हैं। द्वितीयक गतिविधियाँ खेतों, वनों, खदानों एवं सागरों व महासागरों से प्राप्त पदार्थों का रूप परिवर्तन कर उन्हें मूल्यवान बना देती हैं। द्वितीयक गतिविधियाँ विनिर्माण, प्रसंस्करण एवं निर्माण अवसंरचना उद्योग से सम्बन्धित

उदाहरण–(i) कपास एक कच्चा पदार्थ है जिसका उपयोग सीमित है परन्तु रेशे में परिवर्तित होने के पश्चात् यह और अधिक मल्यवान हो जाता है और इसका उपयोग वस्त्र निर्माण में होता है।

(ii) खदानों से प्राप्त लौह अयस्क का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं किया जाता लेकिन अयस्क से इस्पात बनाने के पश्चात् यह मूल्यवान हो जाता है तथा इसका उपयोग अनेक प्रकार की मशीनें व औजार बनाने में होता है।

24. वर्षा जल संरक्षण से होने वाले लाभों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- वर्षा जल संग्रहण के लाभ-- वर्षा जल संग्रहण से निम्नलिखित लाभ हैं-- (1) वर्षा जल संग्रहण धरातलीय व भूमिगत जल की उपलब्धता में वृद्धि कर भूमिगत जल के स्तर को बढ़ाता है साथ ही इससे भूमिगत जल को निकालने में ऊर्जा की बचत होती है।

(2) फ्लोराइड और नाइट्रेट्स जैसे संदूषकों को कम करके अवमिश्रित भूमिगत जल की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

(3) मृदा अपरदन तथा बादों को नियन्त्रित करने में सहयोग मिलता है।

(4) वर्षा जल संग्रहण विधि को जलभृतों के पुनर्भरण के लिए उपयोग किया जाता है जिसके कारण इससे तटीय क्षेत्रों में सागर के लवणीय जल का प्रवेश रुक जाता है।

(5) वर्षा जल संग्रहण घरेलू उपयोग के लिए भूमिगत जल पर, मानवीय समुदाय की निर्भरता को कम करता है।

(6) भारत के अधिकांश नगरों में जल की माँग जल की आपूर्ति की तुलना में काफी बढ़ चुकी है। वर्षा जल संग्रहण से नगरों में जल की बढ़ती माँग को काफी सीमा तक पूरा किया जा सकता है।

25. भारत में चिकित्सा पर्यटन के अवसरों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जब चिकित्सा उपचार को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से जोड़ा जाता है तो उसे सामान्यतया चिकित्सा पर्यटन कहा जाता है। भारत विश्व में चिकित्सा पर्यटन के महत्त्वपूर्ण देश के रूप में उभर रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत के महानगरों में स्थित उच्चकोटी के अस्पताल विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधा। सस्ती कीमत पर उपलब्ध कराते हैं। विश्व स्तर पर अपेक्षाकृत सस्ती सुविधाओं के कारण ही सन 2005 में अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका के 55 हजार रोगियों ने भारत में चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठाया। थाइलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, आस्ट्रेलिया तथा स्विटजरलैण्ड नामक देशों में भी विशिष्ट चिकित्सा सुविधाओं के उपलब्ध होने के कारण चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है।

26. उत्पाद आधारित उद्योगों का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर- उत्पाद आधारित उद्योग–उत्पादन के आधार पर उद्योगों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) आधारभूत उद्योग (ii) गैर आधारभूत उद्योग

(i) आधारभूत उद्योग– वे उद्योग जिनके उत्पाद को अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, आधारभूत उद्योग कहलाते हैं। जैसे–लौह इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है, जिसके उत्पादों का प्रयोग दूसरे उद्योगों में कच्चे माल के रूप में किया जाता है।

(ii) गैर आधारभूत उद्योग-- इसे उपभोक्ता वस्तु उद्योग भी कहा जाता है। इन उद्योगों से निर्मित उत्पादों को सीधे उपभोग के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में ब्रेड व बिस्कुट, चाय, साबुन, वस्त्र, लिखने के लिए कागज, रेडियो, टेलीविजन एवं शृंगार का सामान आदि।

इन विभिन्न प्रकार के सामानों का उत्पादन करने वाले उद्योगों को उपभोक्ता माल बनाने वाले अथवा गैर आधारभूत उद्योग कहा जाता है।

27. सतत् पोषणीय विकास में जल संभर प्रबंधन की भूमिका की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

उत्तर- सतत् पोषणीय विकास में जल संभर प्रबन्धन की भूमिका-- सतत् पोषणीय विकास की संकल्पना की आधारभूत मान्यता यह है कि प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की दर प्राकृतिक संसाधनों के नवीनीकरण की दर से अधिक नहीं होनी चाहिए, जबकि जल संभर प्रबन्धन का प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों तथा समाज के मध्य सन्तुलन स्थापित करना है। स्पष्ट है कि जल संभर विकास तथा सतत् पोषणीय विकास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है।

जल संभर विकास निम्न कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है–

(i) जल संभर से भूमिगत जल स्तर को बढ़ावा मिलता है।

(ii) जल संभर से एकत्रित जल कृषिगत क्षेत्र को बढ़ाने में सहायक है।

(ii) जल संभर कार्यक्रमों से वन भूमि का विस्तार होने के साथ-साथ मृदा अपरदन पर नियंत्रण होता है।

(iv) प्राकृतिक पर्यावरण शुद्ध बना रहता है।

28. भण्डार कितने प्रकार के होते हैं? संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भण्डार तीन प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित है--

(i) उपभोक्ता भंडार– फुटकर व्यापार के अन्तर्गत वृहत् स्तर पर सर्वप्रथम नवाचार लाने वाले उपभोक्ता सहकारी समुदाय वाले थे।

(ii) विभागीय भंडार-- विभागीय भंडार वे होते हैं जो वस्तुओं की खरीद एवं भंडारों के विभिन्न अनुभागों में बिक्री के सर्वेक्षण के लिए विभागीय प्रमुखों को उत्तरदायित्व व प्राधिकार सौंप देते हैं।

(ii) शृंखला भंडार-- शृंखला भंडार वे होते हैं जो अत्यधिक मितव्ययता से व्यापारिक माल का क्रय करते हैं, यहाँ तक कि अपने निर्देश पर सीधे ही वस्तुओं का विनिर्माण करा लेते हैं। प्रायः उनके पास एक भण्डार के अनुभवों के परिणामों को अनेक भंडारों में लागू करने की योग्यता होती है।

29. अधिकतर देशों में उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग प्रमुख महानगरों के परिधि क्षेत्रों में ही क्यों विकसित हो रहे हैं ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- विश्व के अधिकांश देशों में उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों के प्रमुख महानगरों के परिधि क्षेत्र में

विकसित होने के निम्नलिखित कारण हैं–

(1) महानगरं के परिधि क्षेत्रों में एकमंजिले कारखानों तथा भविष्य में उनके विस्तार के लिए भूमि की पर्याप्त उपलब्धता रहती है।

(2) महानगर के परिधि क्षेत्रों में महानगरीय क्षेत्रों की तुलना में सस्ते मूल्यों पर भूमि की उपलब्धता हो जाती है।

(3) महानगर के परिधि क्षेत्रों में यातायात मार्गों का पर्याप्त विकास मिलता है तथा महानगर के आन्तरिक मागों से यह परिधि क्षेत्र उत्तम सड़क मार्गों द्वारा जुड़े होते हैं।

(4) महानगर के परिधि क्षेत्र अपेक्षाकृत रूप से अधिक खुले होने अथवा कभी-कभी एक हरित पट्टी पर अवस्थित होने के कारण महानगर के आन्तरिक भागों की तुलना में कम प्रदूषण वाला सुखद पर्यावरण रखते हैं।

(5) महानगर के परिधि-क्षेत्र के समीपवंती आवासीय क्षेत्रों तथा ग्रामीण बस्तियों से पर्याप्त मात्रा में सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता उद्योगों के लिए हो जाती है।

(6) इस क्षेत्र में स्थापित उद्योगों के लिए महानगरीय बाजार की सुलभ उपलब्धता बनी रहती है।

(7) कभी-कभी सरकार द्वारा महानगर के सघन बसे क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है जिसके कारण महानगर के परिधि क्षेत्र इन उद्योगों की स्थापना के महत्वपूर्ण आकर्षक स्थल बन जाते हैं।

30. क्या कारण है कि पंजाब एवं हरियाणा राज्यों में पर्याप्त जल संसाधन उपलब्ध होने के बावजूद यहाँ भौमजल का स्तर नीचे गिर रहा है?

उत्तर- भारत में कृषि विकास की हरित क्रान्ति की रणनीति मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा के साथ-साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अत्यधिक सफल हुई। यहाँ अधिक कृषिगत उत्पादन प्राप्त करने के लिए फसलों में पर्याप्त सिंचाई का उपयोग किया गया। वर्तमान में भी पंजाब एवं हरियाणा राज्यों में निवल बोये गये क्षेत्र का 25 प्रतिशत भाग सिंचाई के अन्तर्गत आता है। इन राज्यों में गेहूँ और चावल मुख्य रूप से सिंचाई की सहायता से उत्पादित किये जाते हैं। पंजाब व हरियाणा राज्य के गंगा और सतलज नदी बेसिन में स्थित होने के कारण यहाँ भूमिगत जल की पर्याप्त उपलब्धता है। फलस्वरूप यहाँ कुओं व नलकूपों का सिंचाई में भी पर्याप्त उपयोग होता है। निवल सिंचित क्षेत्र का 76.1 प्रतिशत पंजाब में एवं 51.3 प्रतिशत हरियाणा राज्य में कुओं तथा नलकूपों द्वारा सिंचित है। इससे यह ज्ञात होता है कि ये राज्य अपने संभावित भौमजल के एक बड़े भाग का उपयोग सिंचाई के अन्तर्गत करते हैं। जिसके कारण इन राज्यों में भौमजल के स्तर में कमी आ रही है।

31. चतुर्थक क्रियाकलापों का संक्षेप में विवरण व महत्त्व बताइए।

उत्तर- ज्ञानोन्मुखी सेवा सेक्टर से सम्बन्धित क्रियाकलापों में चतुर्थक क्रियाकलाप सम्मिलित हैं। चतुर्थक क्रियाकलापों में सूचना का संग्रहण, उत्पादन तथा प्रकीर्णन सम्मिलित होता है। यह कार्य उच्च-स्तरीय विकास, शोध, विशिष्टीकृत ज्ञान तकनीक तथा . प्रशासनिक क्षमता से सम्बन्धित होते हैं। विश्व की विकसित अर्थव्यवस्थाओं में 50 प्रतिशत से अधिक कर्मी चतुर्थक क्रियाकलापों में कार्यरत हैं। म्यूचुअल फण्ड प्रबन्धक, परामर्शदाता, सॉफ्टवेयर कर्मी तथा विश्वविद्यालयी शिक्षक के अलावा चिकित्सालयों, रंगमंचों, लेखाकार्यों तथा दलाली की फर्मों के कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मी भी इस वर्ग की सेवाओं से सम्बन्धित होते हैं।

32. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर- स्वामित्व के आधार पर उद्योगों के निम्नलिखित तीन वर्ग होते हैं–

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग-- जब किन्हीं उद्योगों का स्वामित्व एवं प्रबंधन केन्द्र या राज्य सरकार के हाथ में हो, तो उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहते हैं। ये उद्योग पूर्णतया सरकार के स्वामित्व में संचालित होते हैं। भारत सहित विश्व के कई समाजवादी देशों में अनेक उद्योग इसी वर्ग से सम्बन्धित हैं।

(ii) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग-- जिन उद्योगों को सरकार एवं निजी लोग मिलकर चलाते हैं, उन्हें संयुक्त क्षेत्र के उद्योग कहते हैं। इन उद्योगों का संचालन निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी के संयुक्त प्रयासों से किया जाता है।

(ii) निजी क्षेत्र के उद्योग-- जब एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के समूह (निगम) अपने स्वामित्व व प्रबंधन में उद्योगों का संचालन करते हैं तो उन्हें निजी क्षेत्र के उद्योग कहते हैं। इन उद्योगों का स्वामित्व व्यक्तिगत पूँजी निवेशकों के पास होता है। विश्व के पूँजीवादी देशों में अधिकांश उद्योग इसी वर्ग से सम्बन्धित होते हैं।

33. वर्षा जल संग्रहण क्या है? इसके किन्ही तीन लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वर्षा जल संग्रहण से आशय-- वर्षा जल संग्रहण एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा विभिन्न उपयोगों के लिए वर्षा के जल को रोका व एकत्रित किया जाता है। यह एक ऐसी कम मूल्य और पारिस्थितिकी अनुकूल विधि है जिसके द्वारा वर्षा जल की प्रत्येक बूंद को संरक्षित करने के लिए वर्षा जल को नलकूपों, गड्ढों तथा कुओं में इकट्ठा किया जाता है।

वर्षा जल संग्रहण के लाभ-- वर्षा जल संग्रहण से निम्नलिखित लाभ हैं–

(i) भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि-- वर्षा जल संग्रहण धरातलीय व भूमिगत जल की उपलब्धता में वृद्धि कर भूमिगत जल के स्तर को बढ़ाता है। साथ ही इससे भूमिगत जल को निकालने में ऊर्जा की बचत होती है

(ii) भूमिगत जल की गुणवत्ता सुधारना-- वर्षा जल संग्रहण फ्लोराइड व नाइट्रेटस जैसे संदूषकों को कम करके अवमिश्रित भूमिगत जल की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

(ii) मृदा अपरदन तथा बाढ़ों को नियत्रित करने में सहयोग-- वर्षा जल संग्रहण में स्थानीय रूप से वर्षा जल को एकत्रित करके भूमि जल भंडारों में संग्रहीत करने से व्यर्थ में वर्षा जल धरातल पर नहीं बहता है जिससे मृदा अपरदन रुकता है एवं बाढ़ों को नियंत्रित करने में भी सहयोग प्राप्त होता है।